FEBRUARY
Week-08

हिन्दी विभाग
BA-III-VI Paper   डॉ गीता कुमारी
विषय- काव्यशास्त्र

14-10-2020
11:45 to 1:20 pm

21 Tuesday
052-314

काव्य प्रयोजन

काव्य प्रयोजन का तात्पर्य है- काव्य रचना का उद्देश्य। काव्य किस उद्देश्य से लिखा जाता है और किस उद्देश्य से काव्य पढ़ा जाता है इसे दृष्टिगत रखकर काव्य प्रयोजनों पर विस्तृत विचार - विमर्श काव्यशास्त्र में किया गया है।

भरत मुनि - नाट्यशास्त्र के रचयिता भरत मुनि ने नाटक के प्रयोजनों पर विचार करते हुए लिखा है,

"धर्म्यं यशस्यं आयुष्यं हित बुद्धि विवर्धनम्।
लोको उपदेश जननम् नाट्यमेतद् भविष्यति ॥"

भरत मुनि द्वारा निर्दिष्ट इन प्रयोजनों में भौतिक प्रयोजनों का व्यापक उल्लेख है किन्तु काव्य का प्रधान उद्देश्य आनन्द प्राप्ति है जिसका उल्लेख यहाँ नहीं किया गया। एक अन्य स्थान पर उन्होंने नाटक का उद्देश्य दुःखार्त व्यक्ति को सुख और शान्ति की प्राप्ति करना बताया है।

Notes

A man who truly wants to make
the world better should start by improving himself and his attitudes.

Scanned with CamScanner

भामह -
आचार्य भामह ने काव्य प्रयोजनों की चर्चा करते हुए लिखा है :
" धर्मार्थ काम मोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्ति प्रीति च साधुकाव्य निबन्धनम् ॥"
अर्थात् धर्म, अर्थ, काम मोक्ष की प्राप्ति कलाओं में निपुणता के साथ-साथ उत्तम काव्य से कीर्ति और प्रीति (आनन्द) की भी प्राप्ति होती है।
भामह के प्रयोजन व्यापक है तथा इसमें कवि और पाठक दोनों के काव्य प्रयोजनों की चर्चा है।

आचार्य वामन
वामन के अनुसार
काव्यं सद् दृष्टा दृष्टार्थ प्रीति-कीर्ति हेतुत्वात्।
अर्थात् काव्य में दो प्रमुख प्रयोजन है।
प्रीति अथवा आनन्द साधना
कीर्ति अथवा यश प्राप्ति

आचार्य मम्मट
आचार्य मम्मट ने अपने ग्रन्थ काव्यप्रकाश में

Scanned with CamScanner

में काव्य प्रयोजनों पर विस्तृत चर्चा की है।

"काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृत्तये कान्तासम्मित तयोपदेशयुजे॥"

अर्थात्– काव्य यश के लिए, अर्थ प्राप्ति के लिए, व्यवहार ज्ञान के लिए अमंगल शान्ति के लिए अलौकिक आनंद की प्राप्ति के लिए और कान्ता के समान मधुर उपदेश प्राप्ति के लिए प्रयोजनीय होते है।

काव्य प्रयोजन के उद्देश्य निम्नलिखित है उनके स्वरूप पर दृष्टि डालते है।

यश प्राप्ति – यश प्राप्ति की इच्छा से कविगण काव्य रचना में प्रवृत्त होते रहे है। अतः यश प्राप्ति को मम्मट ने काव्य का प्रमुख प्रयोजन माना है।
काव्य रचना करके अनेक महाकवियों ने अक्षय यश प्राप्त किया है। कालिदास, सूरदास, तुलसी बिहारी, प्रसाद जैसे अनेक कवि है।

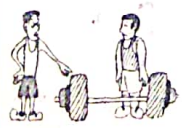

What you cannot enforce, do not command.
Notes

Scanned with CamScanner

कवि कि अपेक्षा होती है उसकी रचना विद्वानों के द्वारा सराही जाए अर्थात यश प्राप्ति की कामना सभी कवियों में रहती है।

अर्थ प्राप्ति - काव्य रचना का एक प्रयोजन धन प्राप्ति भी रहा है। धनोपार्जन की इच्छा से रीतिकालीन कवियों ने राजदरबारों में आश्रय ग्रहण किया। कहते हैं कि बिहारी जी प्रत्येक दोहे की रचना के लिए एक अशर्फी प्राप्त होती थी।

व्यवहार ज्ञान - आचार्य मम्मट ने व्यवहार ज्ञान को भी काव्य प्रयोजन माना है। रामायण आदि महाकाव्य के अनुशीलन से पाठकों को उचित व्यवहार की शिक्षा प्राप्त होती है।

संस्कृत में बहुत सारे साहित्य इसी प्रयोजन को ध्यान में रखकर लिखा गया था। पंचतन्त्र, हितोपदेश [illegible],

आनन्द प्राप्ति - काव्य पढ़ने के साथ ही तुरन्त आनन्द का अनुभव होता है। और परम आनंद की प्राप्ति होती है। काव्य का रसास्वादन लोगों से अलौकिक

Scanned with CamScanner

25 Saturday

आनन्द की अनुभूति होती है। वस्तुतः आनन्दोपलब्धि ही काव्य का प्रमुख प्रयोजन है।

काव्य का रसास्वादन करते समय पाठक को ब्रह्मानन्द के समान अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है। कुछ क्षण के लिए वह अपनी सत्ता को भूलकर काव्य के आनन्द में लीन हो जाता है। इसीलिए काव्यानन्द को ब्रह्मानन्द सहोदर कहा गया है।

26 Sunday

कान्ता सम्मित उपदेश -

काव्य प्रियतमा के समान मधुर उपदेश देने वाला है। उपदेश तीन प्रकार के होते हैं। प्रभु सम्मित, मित्र सम्मित उपदेश, कान्ता सम्मित उपदेश। काव्य का उपदेश कान्ता सम्मित उपदेश है जो हितकर भी है रुचिकर भी है और जिसकी अवहेलना भी नहीं की जा सकती।

जिस प्रकार कान्ता (प्रेयसी) मधुर हाव भावों से पुरुष को मुग्ध करके अपनी इच्छानुकूल नीति मार्ग पर ले जाती है उसी प्रकार काव्य भी मधुर कथा के द्वारा उच्च आदर्शों की शिक्षा देता है।

Scanned with CamScanner